SD–142

Total Page No. : 6] [Roll No. .....

M.A. Ist Semester Examination, 2023–24

हिन्दी

Paper : II

(आदिकालीन एवं निर्गुण काव्य)

Time : 2½ Hours] [**Max. Marks :** 80

नोट :- इस प्रश्न-पत्र में दो खण्ड हैं, खण्ड 'अ' तथा 'ब'। खण्ड 'अ' तथा 'ब' प्रत्येक से किन्हीं **चार**-चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के उत्तर दी गयी उत्तर-पुस्तिका में ही दीजिए। अतिरिक्त उत्तर-पुस्तिका नहीं दी जायेगी।

खण्ड–अ

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 4×5=20

1. पठित अंश के आधार पर पृथ्वीराज रासो की भाषा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. पठित अंश के आधार पर विद्यापति की काव्य-भाषा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. कबीर की रचनाएँ पारम्परिक भारतीय जीवन-पद्धति में मूलभूत बदलावों का आह्वान करती हैं; टिप्पणी लिखिए।

https://www.sdsuvonline.com

4. 'नागमती का वियोग-वर्णन पद्मावत का सर्वोत्तम अंश है।' इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ? और क्यों ?
5. पठित अंश के आधार पर रैदास द्वारा व्यक्त जीवन-मूल्यों को स्पष्ट कीजिए।
6. रहीम के काव्य में वर्णित नीतिगत मूल्यों का महत्व स्पष्ट कीजिए।
7. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने चन्दबरदाई को हिन्दी का पहला महाकवि और पृथ्वीराज रासो को हिन्दी का पहला महाकाव्य कहा है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं और क्यों ?
8. पद्मावत के पठित अंश के आधार पर जायसी की काव्य-भाषा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

खण्ड–ख

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

9. दिए गए छंदों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मनहुँ कला ससमान कला सोलह सो बन्निय।
बाल वैस ससि ता समीप अम्रित रस पिन्निय॥
बिगसि कमल-म्रिग, भ्रमर, बेनु, खंजन, म्रिग लुहिय।
हीर, कीर, अरु बिंब मोति, नष सिष अहि धुट्टिय॥
छप्पति गयंदहरि हंस गति, बिह बनाम संचे सँचिया।
पदमिनिय रूप पद्मावतिय, मनहुँ काम-कामिनि रचिय॥
मनहुँ काम-कामिनि रचिय, रचिय रूप की रास।
पसु पंछी मृग मोहिनी, सुर नर मुनियर पास॥

https://www.sdsuvonline.com

अथवा

पठित अंश के आधार पर पृथ्वीराज रासो के पद्मावती समय की कथा अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

10. प्रदत्त पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

नन्दक नन्द कदम्बक तरु तर।
घिरे-घिरे मुरलि बजाव ॥१॥
समय संकेत-निकेतन बइसल।
बेरि-बेरि बोलि पठाव ॥२॥
सामरि, तोरा लागि
अनुखन विकल मुरारि ॥३॥
जमुनाक तीन उपवन उदबेगल।
फिरि फिरि ततहि निहारि ॥४॥
गोरस बेचए अवइत जाइत
जनि-जनि पुछ बनमारि ॥५॥

अथवा

पठित अंश के आधार पर विद्यापति की रचनाओं में वर्णित और मिश्रित शृंगार की विशिष्टता का परिचय दीजिए।

11. दिए गए पद की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

पंडित बाद बदंते झूठा।
राम कह्याँ दुनियाँ गति पावै, षाँड कह्याँ मुखमीठा ॥टेक॥

https://www.sdsuvonline.com

पावक कह्याँ पाव जे दाझै, जल कहि तृषा बुझाई।
भोजन कह्याँ भूष जे भाजै, तौ सब कोई तिर जाई॥
नरक कै साथि सूवा हरि बोलै, हरि परताप न जानै।
जो कबहूँ उड़ि जाइ जंगल में, बहुरि न सुरते आनै॥
साची प्रीति विषय माया सूँ, हरि भगतनि सूँ हाँसी।
कहै कबीर प्रेम नहिं उपज्यौ, बाँध्यौ जमपुरि जासी॥

अथवा

पठित अंश के आधार पर कबीर की काव्यगत विशेषताओं का उदाहरण सहित परिचय दीजिए।

12. प्रस्तुत कड़वक की सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत कीजिए :

भर भादौं दूभर अति भारी। कैसे भरौं रैनि अँधियारी।१।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नागमैधै धै डसा।२।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।३।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।४।
बरसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जस ओरी।५।
पुरवा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।६।
धनि सूखी भर भादौं माहाँ। अबहूँ आई न सींचति नाहाँ।७।
जल थल भरे अपूरि सब गँगन धरति मिलि एक।
धनि जोबन औगाह महँ दे बूड़त पिय टेक ॥30/६॥

https://www.sdsuvonline.com

अथवा

पठित अंश के आधार पर नागमती वियोग खण्ड का सारांश अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

13. प्रस्तुत दोहों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

अंतरगति राँचै नहीं, बाहर कथैं उदास।

ते नर जमपुर जाहिंगे, सत भाषै रविदास ॥१ ॥

रैदास कहै जाके हृदै, रहै रैन दिन राम।

सोभगता भगवंत सम, क्रोध न व्यापै काम ॥२ ॥

जा देखे घिन उपजै, नरक कुंड में बास।

प्रेम भगति सो ऊधरे, प्रगटत जन रैदास ॥३ ॥

रैदास राति न सोइये, दिवस न करिये स्वाद।

अह-निस हरिजी सुमिरिये, छाड़ि सकल प्रतिवाद ॥४ ॥

अथवा

पठित अंश के आधार पर संत रविदास की बानी की विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए।

14. प्रस्तुत दोहों की सप्रसंग व्याख्या प्रस्तुत कीजिए :

अब रहीम मुश्किल पड़ी, गाढ़े दोऊ काम।

साँचे से तो जग नहीं, झूठे मिलैं न राम॥

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।

https://www.sdsuvonline.com

रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै, फलै अधाय॥

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति।

विपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत॥

अथवा

रहीम के काव्य की प्रासंगिता का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

15. 'कबीर जितने बड़े भक्त हैं उतने ही बड़े समाज-सुधारक भी।' इस कथन के आलोक में कबीर का कवि-परिचय प्रस्तुत कीजिए।

16. विद्यापति की पदावली में संकलित भक्ति के पदों के आधार पर विद्यापति की भक्ति के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

****

https://www.sdsuvonline.com
Whatsapp @ 9300930012
Send your old paper & get 10/-
अपने पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से

https://www.sdsuvonline.com